प्रोफेसर के 'फावड़े' ने बदली एयू कैम्पस की सूरत

TREE BREAK

- साईकिल से चलकर लोगों को देते हैं पर्यावरण सुरक्षा का मैसेज
- जंगल नुमा था नजारा, अब महकती है फूलों की बगिया

vikash.gupta@inext.co.in

ALLAHABAD (10 June): अगर आप इलाहाबाद यूनिवर्सिटी जा रहे हैं और आपको कैम्पस में कोई फावड़ा चलाता नजर आ जाये तो ये मत समझिएगा कि ये कोई माली है. यह शख्स सेंट्रल यूनिवर्सिटी इलाहाबाद के प्रोफेसर एनबी सिंह भी हो सकते हैं. विश्वास नहीं हो रहा न, सोच रहे होंगे कि मोटी पगार पाने वाला प्रोफेसर भला फावड़ा क्यों चलायेगा? लेकिन बात सौ फीसदी सच है. बात हो रही है इविवि में बॉटनी डिपार्टमेंट के प्रोफेसर एनबी सिंह की, जिन्हें हरियाली गुरू के नाम से जाना जाता है. इन्होंने अपना जीवन पर्यावरण को खूबसूरत बनाने और उसकी सुरक्षा में समर्पित कर दिया है.

संक्षिप्त परिचय

- इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से डिफिल किया
- 1996 में एयू में लेक्चरर बने
- 21 वर्ष से एयू में बतौर शिक्षक पढ़ा रहे हैं
- उनके परिवार में पत्नी मिथिलेश सिंह, बेटी दिप्ती, ज्योति, आभा और बेटा शिवम नरसिंह है
- उनका स्लोगन है बी ग्रीन बाय ग्रीन (प्रदूषण मुक्त बनिये, प्रदूषण रहित सामान खरीदिये)
- ट्रीस आर सिम्बोलर्स पुट सिम्बोलर्स ऑन द अर्थ (वृक्ष लगाइये, वृक्ष धरती पर आपके हस्ताक्षर हैं)

Allahabad Calling!

ट्री ब्रेक पर आप भी कुछ कहना चाहते हैं तो आपका स्वागत है. आपने विचार हमें आप इन माध्यमों से भेज सकते हैं.

allahabad@inext.co.in

9839333301
8933868462

For more news log on to www.inextlive.com

सड़क पर पन्नी बीन करकरते थे सफाई

प्रो. एनबी सिंह यह काम साल 2004 से नि:स्वार्थ भाव से कर रहे हैं. शुरू में वे सड़कों की सफाई पन्नी बिनकर करते थे. पर्यावरण के प्रति उनका लगाव देखकर एक्स. वाइस चांसलर प्रो. एके सिंह ने उन्हें गार्डेन इंचार्ज का पद दे दिया. उस समय इविवि कैम्पस की हालत काफी दयनीय थी. तब पूरे परिसर में जंगल सा नजारा था. चारो तरफ केवल घास ही घास नजर आती थी. पद संभालने के बाद से प्रो. एनबी सिंह ने परिसर को हरा भरा बनाने के लिये रात दिन एक कर दिया.

गरीब बच्चों पर खर्च करते हैं ट्रांसपोर्ट एलाउंस

जब वे अपने माली और स्वीपर के साथ परिसर में काम कर रहे होते हैं तो खुद भी फावड़ा चलाने में संकोच नहीं करते. इसे लेकर कई बार उनकी आलोचना भी हो चुकी है. खास बात ये है कि प्रो. सिंह का पूरा परिवार साईकिल से चलता है. कई बार उन्हें इसके लिये बाहरी लोगों से उलाहना भी सुनने को मिला कि एक प्रोफेसर होकर साईकिल से चलना उन्हें शोभा नहीं देता. लेकिन इन सबसे बेपरवाह प्रो. सिंह का पर्यावरण के प्रति लगाव और खुद साईकिल से चलकर लोगों को संदेश देने का भाव कम नहीं हुआ. प्रो. सिंह ने बताया कि वे साइकिल से चलकर 04 हजार रुपये तक ट्रांसपोर्ट एलाउंस बचाते हैं. इस पैसे का उपयोग वे गरीब बच्चों की नि:शुल्क शिक्षा में करते हैं.

प्रोफेसर की मेहनत ने एयू कैम्पस को किया हरा-भरा.

गिफ्ट देते हैं सीता अशोक का पौधा

उनकी कड़ी मेहनत का ही परिणाम है कि आज इविवि कैम्पस की सूरत बदल चुकी है. अब यहां जगह-जगह आपको गुलदावदी, मुर्गा केस, दहेलिया, ज्लाक्स, डेल फ्रिनियम, डाग फ्लावर, सैलविया, गेंदा, जीनिया, वरवेना, कासमस, सन फ्लावर, पिटूनिया, इन्द्रबेल, मालती, रातरानी आदि फूलों की बगिया महकती मिल जायेगी. उनके परिश्रम को वर्तमान वाइस चांसलर प्रो. आरएल हांगलू से भी बल मिल रहा है. प्रो. एनबी सिंह बताते हैं कि यूनिवर्सिटी के खास आयोजनों में उनकी कोशिश होती है कि वे अपने अतिथियों को पुष्पगुच्छ की बजाय सीता अशोक का पौधा गिफ्ट करें. यह वही पौधा है, जिसका फूल माता सीता अशोक वाटिका में खाती थी. यह पौधा इविवि कैम्पस में भी लग है.